IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षण में व्यावसायिक चयन पर पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों का प्रभाव

[1]देवेश कुमार [2]प्रो. हरिशंकर सिंह

[1]एम.एड. (शोध छात्र), [2]प्रोफ़ेसर शिक्षा विभाग

[1]शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ २२६०२५ उ.प्र.

[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ उ.प्र.

सार :

"शिक्षण में व्यावसायिक चयन पर पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव" विषय पर आधारित यह अध्ययन एक वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित शोध है। इस शोध का उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा शिक्षण व्यवसाय के चयन में विभिन्न कारकों की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन के लिए बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के कुल 200 विद्यार्थियों का चयन सुविधाजनक एवं यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया। डेटा संग्रह हेतु संरचित प्रश्नावली एवं अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया।

विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अधिकांश विद्यार्थी शिक्षण को आत्म-संतुष्टि एवं समाज सेवा से जुड़ा एक सम्मानजनक व्यवसाय मानते हैं। साथ ही, सामाजिक प्रभाव एवं आर्थिक परिस्थितियाँ भी उनके निर्णय को कुछ हद तक प्रभावित करती हैं।

अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण व्यवसाय का चयन मुख्यतः आंतरिक प्रेरणा पर आधारित होता है, जबकि सामाजिक स्वीकृति एवं आर्थिक कारक इसमें सहायक भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द : शिक्षण व्यवसाय चयन, व्यावसायिक प्रेरणा, अभिवृत्ति , शिक्षक शिक्षा, व्यावसायिक चयन

परिचय :

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास की आधारशिला है, जिसमें शिक्षक की भूमिका केंद्रीय महत्व रखती है। शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषण नहीं करता, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यों एवं दृष्टिकोण के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस प्रकार शिक्षण एक ऐसा करियर है जो रोजगार के साथ-साथ समाज निर्माण की प्रक्रिया का भी महत्वपूर्ण आधार है।

आधुनिक समय में व्यावसायिक चयन एक बहुआयामी प्रक्रिया बन चुका है, जो व्यक्ति की रुचि, योग्यता एवं बाह्य परिस्थितियों से प्रभावित होता है। विशेष रूप से शिक्षण व्यवसाय का चयन पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम माना जाता है। परिवार व्यक्ति की प्रारंभिक सोच, मूल्य प्रणाली और करियर आकांक्षाओं को आकार देता है, जबकि समाज में किसी पेशे की प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक मान्यताएँ और रोल मॉडल इस निर्णय को प्रभावित करते हैं। आर्थिक स्थिति, रोजगार की स्थिरता तथा वेतन संरचना जैसे पहलू भी व्यावसाय चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण पेशे में प्रवेश केवल बाह्य परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इसमें आंतरिक प्रेरणाएँ भी समान रूप से कार्य करती हैं। रिचर्डसन एवं वॉट (2006) तथा किरियाकोउ एवं कूल्थार्ड (2000) के अनुसार शिक्षण का चयन मुख्यतः समाज सेवा की भावना और शिक्षण में रुचि से प्रेरित होता है। वहीं ओईसीडी (2018) और इंगरसोल (2001) जैसे अध्ययन इसे एक सुरक्षित एवं सीमित विकल्पों की स्थिति में अपनाया गया करियर भी मानते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक प्रभाव, व्यक्तिगत मूल्य एवं करियर संतुष्टि भी इस निर्णय को आकार देते हैं।

समग्र रूप से यह स्पष्ट है कि शिक्षण व्यावसायिक चयन एक जटिल एवं बहुस्तरीय प्रक्रिया है, जिसमें पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत प्रेरणाएँ परस्पर अंतःक्रिया करती हैं। अतः इन कारकों का व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक है ताकि यह समझा जा सके कि व्यक्ति शिक्षण पेशे को किस प्रकार और किन परिस्थितियों में अपनाता है। यह अध्ययन न केवल इस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करेगा, बल्कि भविष्य में नीति निर्माण एवं शिक्षक शिक्षा के सुधार हेतु भी उपयोगी सिद्ध होगा।

साहित्यिक समीक्षा :

शिक्षण को परंपरागत रूप से एक गरिमामय और समाजोपयोगी पेशा माना जाता है, किंतु आज भी कुछ देशों में यह धारणा प्रचलित है कि छात्र इसे तब चुनते हैं जब अन्य सभी विकल्प असफल हो जाते हैं, अर्थात यह उनका "अंतिम विकल्प" होता है। हालांकि विभिन्न अंतरराष्ट्रीय शोध अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि यह सामान्यीकृत धारणा पूर्णतः सत्य नहीं है।

उदाहरणस्वरूप, कॉर्ब (2010, 2012) द्वारा नाइजीरिया में किए गए अध्ययन में पाया गया कि केवल 18% छात्रों ने ही स्वीकार किया कि उन्होंने शिक्षण को अंतिम विकल्प के रूप में चुना, जबकि शेष छात्रों ने इसे सामाजिक योगदान, बच्चों के भविष्य को आकार देने और व्यक्तिगत संतोष के कारण अपनाया। इसी प्रकार शरीफ आदि (2014) के यूएई में किए गए अध्ययन से पता चलता है कि बी.एड. छात्र मुख्यतः आंतरिक (intrinsic) और परोपकारी (altruistic) कारणों से शिक्षण को अपनाते हैं, जैसे बच्चों को पढ़ाने का आनंद, आत्मिक संतोष और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना, जबकि बाह्य (extrinsic) कारकों जैसे वेतन, कार्य समय और नौकरी की स्थिरता की भूमिका अपेक्षाकृत सीमित पाई गई।

मुकमिनिन आदि (2017) ने इंडोनेशिया में महिला छात्र-शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में पाया कि शिक्षण चयन के पीछे ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा करने की इच्छा, युवा पीढ़ी को शिक्षित करने की प्रेरणा तथा रोल मॉडल्स का प्रभाव प्रमुख रहा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण का चयन केवल व्यावसायिक निर्णय नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक प्रेरणाओं से भी गहराई से जुड़ा होता है।

डी म्यूनक आदि (2011) द्वारा दक्षिण अफ्रीका, हंगरी और नीदरलैंड्स में किए गए तुलनात्मक अध्ययन में यह पाया गया कि प्रेरणा के विभिन्न स्रोत—जैसे प्रेरक शिक्षक, पारिवारिक समर्थन, धार्मिक विश्वास तथा शिक्षण अनुभव—इस पेशे के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रेरणा एक सतत प्रक्रिया है, जो प्रवेश स्तर के साथ-साथ प्रशिक्षण और व्यावहारिक अनुभव के दौरान भी विकसित होती रहती है।

हालाँकि कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि प्रारंभ में कई छात्रों ने शिक्षण को "fallback career" के रूप में चुना, लेकिन अनुभव प्राप्त करने के बाद उनका दृष्टिकोण बदल गया और उन्होंने इस पेशे को अपने जीवन का

महत्वपूर्ण हिस्सा मान लिया। उदाहरण के लिए, कॉर्ब (2012) के केस अध्ययन में मैरी प्रॉमिस ऑडू ने बैंक की नौकरी छोड़कर शिक्षण को अपनाया, क्योंकि उसे इसमें मानसिक संतुलन और आत्म-संतोष प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शरीफ, उपाध्याय एवं अहमद (2016) के अध्ययन में प्रवासी शिक्षकों के अनुभव बताते हैं कि कुछ व्यक्तियों ने इसे प्रारंभ में सीमित विकल्पों के कारण अपनाया, लेकिन बाद में इसे एक उद्देश्यपूर्ण और मूल्य-आधारित पेशे के रूप में स्वीकार किया। इसी तरह केचिची (2019) ने तुर्की में यह निष्कर्ष निकाला कि निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्र भी शिक्षण को इसलिए चुनते हैं क्योंकि यह उन्हें सामाजिक योगदान का अवसर और नौकरी की सुरक्षा प्रदान करता है।

इस साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय के चयन में पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार का समर्थन, शिक्षित वातावरण और रोल मॉडल्स छात्रों को शिक्षण की ओर प्रेरित करते हैं। सामाजिक दृष्टि से शिक्षण को एक सम्मानजनक और सेवा-प्रधान पेशा माना जाना भी इसके चयन को प्रभावित करता है। आर्थिक कारक जैसे नौकरी की सुरक्षा, स्थिर आय और सरकारी अवसर भी कई विद्यार्थियों के निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समग्र रूप से, शिक्षण व्यवसाय का चयन केवल व्यक्तिगत रुचि पर नहीं, बल्कि इन सभी बाहरी कारकों के संयुक्त प्रभाव पर आधारित होता है।

शोध के उद्देश्य :

शिक्षण व्यवसाय के चयन में मित्रों और आदर्श व्यक्तियों (रोल मॉडल) के प्रभाव का अध्ययन करना।

शिक्षण व्यवसाय के चयन पर सामाजिक परिवेश और मान्यताओं की भूमिका का विश्लेषण करना।

शिक्षण को अपनाने के निर्णय में व्यक्तिगत प्रेरणा और आर्थिक प्रभावों के पारस्परिक संबंध का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन “शिक्षण में व्यावसायिक चयन पर पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव” एक वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित सामाजिक-विज्ञान शोध है, जिसमें बी.एड. प्रशिक्षुओं पर विभिन्न कारकों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन का डेटा बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय एवं लखनऊ विश्वविद्यालय से एकत्र किया गया है, जिसमें केवल बी.एड. के छात्र शामिल हैं तथा 200 प्रतिभागियों को सुविधाजनक एवं यादृच्छिक नमूना विधि से चयनित किया गया है। डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली एवं अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया, जिसके माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों तथा शिक्षण करियर के प्रति दृष्टिकोण का आकलन किया गया।

अध्ययन का दायरा :

प्रस्तुत अध्ययन “शिक्षण में व्यावसायिक चयन पर पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव” का दायरा बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा इनसे संबद्ध बी.एड. प्रशिक्षु विद्यार्थियों तक सीमित है। यह अध्ययन केवल बी.एड.के छात्रों पर केंद्रित है, जिनसे शिक्षण व्यवसाय चयन से संबंधित आंकड़े एकत्र किए गए हैं। इसमें पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह समझा जा सके कि ये तत्व शिक्षण पेशे के चयन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या :

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 200 बी.एड. विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। लिंग के आधार पर इनमें 131 पुरुष तथा 68 महिलाएँ सम्मिलित थीं, जिससे पुरुष प्रतिभागियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। निवास स्थान के अनुसार 104 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 96 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र से थे, जो अध्ययन में लगभग संतुलित वितरण को दर्शाता है। आयु वर्ग के अनुसार 20–25 वर्ष के 137 विद्यार्थी, 26–30 वर्ष के 50 विद्यार्थी तथा 31 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के 13 विद्यार्थी शामिल थे, जिससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश प्रतिभागी युवा वर्ग से संबंधित हैं। विश्वविद्यालय के आधार पर 97 विद्यार्थी बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय तथा 103 विद्यार्थी

लखनऊ विश्वविद्यालय से लिए गए। विषय चयन के अनुसार 90 विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान, 83 विज्ञान तथा 27 भाषा विषय से संबंधित थे। यह विविधतापूर्ण वितरण अध्ययन को अधिक संतुलित और विश्वसनीय बनाता है, जिससे प्राप्त निष्कर्षों की प्रामाणिकता बढ़ती है।

उद्देश्य 1. शिक्षण व्यवसाय के चयन में मित्रों और आदर्श व्यक्तियों (रोल मॉडल) के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय से संबंधित तीन प्रमुख कथनों पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का समग्र विश्लेषण किया गया। "शिक्षण कार्य मेरी व्यक्तिगत संतुष्टि का एक कारक है" कथन पर अधिकांश विद्यार्थियों ने सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया, जिसमें 58 ने पूर्णतः सहमति और 105 ने सहमति जताई, जबकि 21 तटस्थ रहे तथा केवल 8-8 विद्यार्थियों ने असहमति और पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जिससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण को अधिकांश प्रतिभागी संतोषप्रद एवं आत्म-प्रेरक पेशा मानते हैं। इसी प्रकार "मेरे परिवार/दोस्तों ने मुझे शिक्षण व्यवसाय अपनाने की सलाह दी" कथन पर 22 ने पूर्णतः सहमति, 46 ने सहमति, 43 ने तटस्थ, 24 ने असहमति तथा 11 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि पारिवारिक एवं सामाजिक सलाह का कुछ विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय चयन पर प्रभाव अवश्य पड़ा है, लेकिन यह निर्णायक भूमिका में नहीं है। वहीं "मेरे दोस्तों/रोल मॉडल के प्रभाव से मैंने शिक्षण को अपनाया" कथन पर 25 ने पूर्णतः सहमति, 73 ने सहमति, 43 ने तटस्थ, 48 ने असहमति तथा 11 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मित्रों एवं रोल मॉडल का प्रभाव कई विद्यार्थियों पर सकारात्मक रहा है, लेकिन सभी विद्यार्थियों पर इसका समान प्रभाव नहीं देखा गया।

उद्देश्य 2. शिक्षण व्यवसाय के चयन पर सामाजिक परिवेश और मान्यताओं की भूमिका का विश्लेषण करना

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय के चयन पर सामाजिक परिवेश और मान्यताओं की भूमिका से संबंधित तीन प्रमुख कथनों के आधार पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया। "समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए मैं शिक्षण को एक साधन समझता/समझती हूँ" कथन पर 77 विद्यार्थियों ने पूर्णतः सहमति, 93 ने सहमति, 15 ने तटस्थ, 4 ने असहमति तथा 11 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी शिक्षण को सामाजिक परिवर्तन और विकास का प्रभावी माध्यम मानते हैं। "मेरा मानना है कि शिक्षकों को समाज में पर्याप्त सम्मान मिलता है" कथन के संदर्भ में 53 ने पूर्णतः सहमति, 104 ने सहमति, 25 ने तटस्थ, 8 ने असहमति तथा 10 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश प्रतिभागी शिक्षक पेशे को सामाजिक रूप से सम्मानित और प्रतिष्ठित मानते हैं। इसी प्रकार "मेरे सामाजिक दायरे में शिक्षण को प्रतिष्ठित और स्वीकार्य माना जाता है" कथन पर 47 ने पूर्णतः सहमति, 106 ने सहमति, 27 ने तटस्थ, 11 ने असहमति तथा 9 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जिससे निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक परिवेश में शिक्षण को एक सम्मानजनक और स्वीकार्य व्यवसाय के रूप में देखा जाता है, हालांकि कुछ विद्यार्थियों की राय इससे भिन्न भी रही है।

उद्देश्य 3. शिक्षण को अपनाने के निर्णय में व्यक्तिगत प्रेरणा और आर्थिक प्रभावों के पारस्परिक संबंध का मूल्यांकन करना

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण को अपनाने के निर्णय में व्यक्तिगत प्रेरणा तथा आर्थिक प्रभावों के पारस्परिक संबंध का गहन विश्लेषण किया गया। "शिक्षण कार्य मेरी व्यक्तिगत संतुष्टि का एक कारक है" कथन पर अधिकांश विद्यार्थियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, जिसमें 58 ने पूर्णतः सहमति, 105 ने सहमति, 21 ने तटस्थ, 8 ने असहमति तथा 8 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण को अधिकतर विद्यार्थी आत्म-संतोष प्रदान करने वाला और अर्थपूर्ण पेशा मानते हैं। "शिक्षण कार्य आरंभ से ही मेरी प्राथमिकता में सम्मिलित रहा है" कथन पर 55 ने पूर्णतः सहमति, 95 ने सहमति, 25 ने तटस्थ, 13 ने असहमति तथा 12 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जो दर्शाता है कि बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने प्रारंभ से ही शिक्षण को व्यवसाय विकल्प के रूप में गंभीरता से अपनाया है। इसके विपरीत "मैं शिक्षण कार्य को मात्र आय का साधन मानता हूँ" कथन पर 14 ने पूर्णतः सहमति, 61 ने सहमति, 35 ने तटस्थ, 64 ने असहमति तथा 26 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जिससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी शिक्षण को केवल आर्थिक लाभ का माध्यम नहीं मानते, बल्कि इसे एक जिम्मेदारीपूर्ण और सेवा-भावना से

जुड़ा पेशा समझते हैं। वहीं "मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति ने शिक्षण पेशे में आने के मेरे निर्णय को प्रभावित किया" कथन पर 29 ने पूर्णतः सहमति, 73 ने सहमति, 48 ने तटस्थ, 38 ने असहमति तथा 12 ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि आर्थिक परिस्थितियाँ कुछ विद्यार्थियों के निर्णय को प्रभावित करती हैं, लेकिन यह प्रमुख या एकमात्र कारक नहीं है। समग्र रूप से निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण व्यवसाय का चयन मुख्यतः व्यक्तिगत प्रेरणा और संतुष्टि पर आधारित है, जबकि आर्थिक प्रभाव इसकी पूरक भूमिका निभाते हैं।

चर्चा एवं सुझाव :

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि शिक्षण व्यवसाय का चयन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्तिगत प्रेरणा, सामाजिक परिवेश और आर्थिक परिस्थितियाँ एक साथ प्रभाव डालती हैं। अधिकांश विद्यार्थियों ने शिक्षण को व्यक्तिगत संतुष्टि और समाज सेवा से जुड़ा पेशा माना, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आंतरिक प्रेरणा इस व्यवसाय चयन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वहीं सामाजिक मान्यताओं, परिवार और मित्रों का प्रभाव भी कुछ हद तक विद्यार्थियों के निर्णय को प्रभावित करता है, लेकिन यह निर्णायक नहीं पाया गया। सामाजिक स्तर पर शिक्षण को एक प्रतिष्ठित और सम्मानजनक पेशे के रूप में देखा जाता है, जो विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। आर्थिक दृष्टि से कुछ विद्यार्थियों पर परिवार की स्थिति का प्रभाव अवश्य देखा गया, लेकिन अधिकांश ने शिक्षण को केवल आय का साधन नहीं माना, बल्कि इसे एक सेवा-भावना और उद्देश्यपूर्ण व्यवसाय के रूप में स्वीकार किया।

इस अध्ययन के आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों में शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और आंतरिक प्रेरणा को और अधिक मजबूत करना चाहिए। व्यवसाय मार्गदर्शन कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षण पेशे की वास्तविक भूमिका और संभावनाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। समाज में शिक्षण की प्रतिष्ठा को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति एवं अन्य सहायता योजनाओं का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि वे बिना किसी बाधा के इस व्यवसाय को चुन सकें। साथ ही, शिक्षक प्रशिक्षण में आधुनिक तकनीकों, डिजिटल शिक्षण विधियों और रोल मॉडल आधारित गतिविधियों को शामिल कर शिक्षण को और अधिक आकर्षक एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय का चयन एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्तिगत प्रेरणा, सामाजिक परिवेश और आर्थिक परिस्थितियाँ संयुक्त रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यार्थी शिक्षण को आत्म-संतुष्टि और समाज सेवा से जुड़ा एक सम्मानजनक पेशा मानते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि आंतरिक प्रेरणा इस व्यवसाय चयन का प्रमुख आधार है। साथ ही, परिवार, मित्रों और समाज का प्रभाव भी विद्यार्थियों के निर्णय को कुछ हद तक प्रभावित करता है, किंतु यह अकेला निर्णायक कारक नहीं है। आर्थिक कारक भी कुछ विद्यार्थियों के चयन में भूमिका निभाते हैं, परंतु अधिकांश प्रतिभागियों ने शिक्षण को केवल आय का साधन नहीं माना। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय का चयन मुख्यतः मूल्य-आधारित और प्रेरणात्मक प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक स्वीकृति और आर्थिक परिस्थितियाँ सहायक भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ :

1. रिचर्डसन, पी. डब्ल्यू., एवं वॉट, एच. एम. जी. (2006). *कौन शिक्षण को चुनता है और क्यों? टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन*, 22(5), 581–595.
2. किरियाकौ, सी. (2014). *शिक्षक तनाव और बर्नआउट: एक अंतरराष्ट्रीय समीक्षा। एजुकेशनल रिसर्च*, 56(2), 143–153.
3. ओईसीडी (2018). *टीचिंग एंड लर्निंग इंटरनेशनल सर्वे 2018 के परिणाम।* ओईसीडी पब्लिशिंग।
4. इंगरसोल, आर. एम. (2001). *शिक्षक परिवर्तन (टर्नओवर) और शिक्षक की कमी: एक संगठनात्मक विश्लेषण। अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल*, 38(3), 499–534.
5. कोर्बे, के. ए. (2010). *क्या शिक्षा संकाय के छात्र शिक्षण को अंतिम विकल्प के रूप में करियर चुनते हैं? इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़*, 1(2), 117–121.
6. कोर्बे, के. ए. (2012, 27 अक्टूबर). *क्या शिक्षण एक अंतिम विकल्प करियर है? वीकली ट्रस्ट*।
7. शरीफ़, टी., होसान, सी. जी., एवं मैकमिन, एम. (2014). *शिक्षक बनने के इरादे की प्रेरणा और निर्धारण: यूएई में बी.एड. छात्रों पर एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिज़नेस एंड मैनेजमेंट*, 9(5), 60–73. https://doi.org/10.5539/ijbm.v9n5p60
8. मुकमिनिन, ए., कामिल, डी., मुज़ा, एवं हर्यांतो, ई. (2017). *शिक्षक शिक्षा क्यों? इंडोनेशिया में बिना दस्तावेज़ वाली महिला छात्र-शिक्षिकाओं की प्रेरणाओं का अभिलेखन: एक केस स्टडी। द क्वालिटेटिव रिपोर्ट*, 22(1), 309–326. https://doi.org/10.46743/2160-3715/2017.2640
9. शरीफ़, टी., उपाध्याय, डी., एवं अहमद, ई. (2016). *शिक्षण को करियर के रूप में प्रभावित करने वाले प्रेरक कारक (FIT): अमीरात में प्रवासी शिक्षकों पर एक अनुभवजन्य अध्ययन। द जर्नल ऑफ डिवेलपिंग एरियाज़*, 50(6), 207–218. https://doi.org/10.1353/jda.2016.0148
10. केचिची, एस. (2019). *शिक्षक पेशे को चुनने के कारण: पूर्व-सेवा (प्रि-सर्विस) शिक्षकों के दृष्टिकोण। एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग*, 5(2), 309–315. https://doi.org/10.20448/journal.522.2019.52.309.315